



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण
EXTRAORDINARY

भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (ii)
PART II—Section 3—Sub-section (ii)

प्राधिकार से प्रकाशन
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं० 115]

नई दिल्ली, सोमवार, मार्च 31, 1986/चैत्र 10, 1908

No. 115]

NEW DELHI, MONDAY, MARCH 31, 1986/CHAITRA 10, 1908

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह जमा संकलन के रूप में
रखा जा सके
Separate Paging is given to this Part in order that it may be filed as
a separate compilation

वित्त मंत्रालय

(राजस्व विभाग)

केन्द्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड

नई दिल्ली, 31 मार्च, 1986

अधिसूचना

धन-कर

का. अ. 149 (अ) - केन्द्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड धन-कर अधि-
नियम, 1957 (1957 का 27) की धारा 46 द्वारा प्रदत्त शक्तियों का
प्रयोग करते हुए, धन-कर नियम, 1957 में वसतिपय और सशोधन करना
बहुत है। प्रस्तावित सशोधनों के निम्नलिखित प्राप्ति उन सभी व्यक्तियों
की जानकारी के लिए प्रकाशित किये जा रहे हैं जिनके उनमें प्रभावित
होने की संभावना है और सूचना दी जाती है कि उक्त प्राप्ति नियमों पर
15 मई, 1986 को या उसके पश्चात विचार किया जाएगा।

उक्त तारीख के पूर्व, नियमों के उक्त प्राप्ति की बबत जो भी
प्रश्न या सुझाव किसी व्यक्ति से प्राप्त होंगे, केन्द्रीय प्रत्यक्ष-कर बोर्ड उन
पर विचार करेगा।

निर्णयों का प्राप्ति

1 (1) इन निर्णयों का नाम धन-कर (सशोधन) नियम 1986
है।

(2) ये 1 अप्रैल, 1987 को प्रवृत्त होंगे।

2. धन-कर नियम, 1957 में,-

(क) नियम 1क में, खंड (ट) के पश्चात निम्नलिखित खंड अंतः
स्थापित किया जाएगा, अर्थात् -

“(टक) किसी कंपनी के साधारण शेयर या अधिमानी शेयर के
संबंध में “स्टॉक एक्सचेंज में नियमित रूप से कोट किए
गए शेयर” से निम्नलिखित अभिप्रेत है -

(i) भारत में किसी मान्यताप्राप्त स्टॉक एक्सचेंज में समय
समय पर नियमित रूप से कोट किया गया शेयर; और

(ii) कारबार के साधारण अनुक्रम में किए गए चासू संबंध-
बहनों पर आधारित ऐसे शेयरों के क्रोडेशन;”;

(ख) नियम 1खख में,-

(i) उप-नियम (1) के स्थान पर, निम्नलिखित उप-नियम
रखा जाएगा, अर्थात् -

“(i) धारा 7 की उपधारा (1) के प्रयोजनों के लिये, ऐसे गृह का मूल्य पूर्वोक्त गृह किराए को भिन्न 12.5 से गुणा करके निकाली गई रकम होगी :

परन्तु पट्टाघृत भूमि पर निर्मित गृह के संबंध में यह उप-नियम इस प्रकार प्रभावी होगा मानो भिन्न 12.5 के स्थान पर,—

(क) जहाँ गृह पट्टाघृत भूमि पर निर्मित किया गया है और पट्टे की अवशेषित अवधि पचास वर्ष या अधिक है, भिन्न 10.0 प्रतिस्थापित की गई है ; और

(ख) जहाँ गृह पट्टाघृत भूमि पर निर्मित किया गया है और पट्टे की अवशेषित अवधि पचास वर्ष से कम है वहाँ भिन्न 8.0 प्रतिस्थापित की गई है :

परन्तु यह और कि 31 मार्च, 1974 के पश्चात अर्जित या निर्मित गृह के संबंध में, यदि इस प्रकार से निकाला गया मूल्य अर्जन को लगत या निर्माण की लागत, तथा गृह में किए गए सुधारों की लागत, यदि कोई है, को जोड़कर, से भिन्नतर है तो अर्जन को उक्त लागत या निर्माण की उक्त लागत को गृह का इस नियम के अधीन मूल्य माना जाएगा।” ;

(ii) उपनियम (2) में खंड (क) के स्थान पर, निम्नलिखित खंड रखा जाएगा, अर्थात् :—

“(क) किसी गृह के संबंध में “उधार्य सकल किराया” से निम्नलिखित अभिप्रेत है —

(i) जहाँ गृह किराए पर है, वहाँ स्वामी द्वारा वार्षिक किराए के रूप में प्राप्त की गई या प्राप्य रकम, या

(ii) जहाँ गृह किराए पर नहीं है वहाँ स्थानीय प्राधिकारी द्वारा सम्पत्ति-कर या किसी अन्य कर के उदग्रहण के प्रयोजनों के लिए निर्धारित जांचित किराए की रकम जो कि उक्त करों के निर्धारण का आधार है और ऐसे स्थानीय प्राधिकारी के न होने की दशा में, वह रकम जो स्वामी को उचित रूप से प्राप्त होने की संभावना थी यदि ऐसी सम्पत्ति निष्पन्न पर नगई जाती।

स्पष्टीकरण — “वार्षिक किराया” से —

(1) उप-खंड (i) के प्रयोजनों के लिए निम्नलिखित अभिप्रेत है,—

(क) ऐसे मामले में जहाँ गृह पूरे पूर्व में किराए पर रखा है, ऐसे स्वामी द्वारा ऐसे वर्ष की वास्तविक प्राप्त वास्तविक किराया ;

(ख) किसी अन्य मामले में, ऐसी रकम जो स्वामी द्वारा उक्त अवधि के लिए, जिसके लिए वह सम्पत्ति निष्पन्न पर थी, प्राप्त किए गए या प्राप्त किए जाने वाले किराए की वास्तविक रकम के उम्मीद अनुपात में होगी जो अनुपात ऐसी प्रवृत्ति और बरतन के बीच है ;

(ग) जहाँ गृह निष्पन्न किराएदार के अधिभोग में है और किसी स्थानीय प्राधिकार द्वारा ऐसे गृह की वास्तविक उद्ग्रहण-कर या उक्त गृह की मरम्मत पर व्यय पूर्णता या भाग्य किराएदार द्वारा वहन किया जाता है, वार्षिक

किराया और उसके अतिरिक्त किराएदार द्वारा वहन किए गए करों की रकम या मरम्मतों का व्यय ;

(2) उप-खंड (i) और (ii) के प्रयोजनों के लिए निम्नलिखित अभिप्रेत है,—

(क) जहाँ स्वामी ने निक्षेप के रूप में कोई रकम, चाहे किराए मद्धे अभिम संदाय के रूप में या अन्यथा, ग्रहण की है, वार्षिक किराया और उसके अतिरिक्त ऐसे निक्षेप के पन्द्रह प्रतिशत की दर पर संगणित रकम ;

(ख) जहाँ स्वामी गृह को पट्टे पर देने या गृह को पट्टे की शर्तों में उपान्तरण करने के कारण गृह से कोई फायदा या परिलब्धि प्राप्त करता है, चाहे वह धन के रूप में संघ-रिवर्तनीय है या नहीं वार्षिक किराया और उसके अतिरिक्त ऐसे फायदा या परिलब्धि का मूल्य ;” ;

(ग) नियम 1घ में,—

(i) “85 प्रतिशत” शब्दों और शब्दों के स्थान पर “पचासी प्रतिशत” शब्द रखे जाएंगे ;

(ii) परन्तुक का लोप किया जाएगा।

(घ) नियम 1घ के पश्चात निम्नलिखित नियम अंतः स्थापित किया जाएगा, अर्थात् :—

“विनिधान कंपनियों के क्रोट न किए गए साधारण शेयरों का बाजार मूल्य”—

‘1ड. (1) विनिधान कंपनियों के क्रोट न किए गए साधारण शेयर के बाजार मूल्य का अवधारण निम्नलिखित प्रकार से किया जाएगा, अर्थात् :—

ऐसी कंपनी के तुलनपत्र में यथावशित सभी दायित्वों के मूल्य की उस तुलनपत्र में दशित उसकी सभी आस्तियों के मूल्य में से कटौती की जाएगी। प्रत्येक साधारण शेयर का बाजार मूल्य उसका इस प्रकार निकाली गई शुद्ध रकम को कंपनी की कुल समादत्त पूंजी से विभाजित करके प्राप्त गुणन खंड से गुणा करके निकाला गया समस्त मूल्य होगा।

(2) उपनियम (1) के प्रयोजनों के लिए तुलनपत्र में प्रकट की गई आस्ति का मूल्य उस विशिष्ट आस्ति को लागू होने वाले नियम के अनुसार अवधारित उसका मूल्य माना जाएगा और यदि ऐसा कोई नियम नहीं है तो वह कीमन माना जाएगा जो उस आस्ति के लिए मिलेगा यदि उसे मूल्यांकन की तारीख को खुले बाजार में विक्रय किया जाए।

स्पष्टीकरण — इस नियम के प्रयोजनों के लिए, —

(क) “तुलनपत्र” का वही अर्थ है जो नियम 1घ के स्पष्टीकरण 1 में है।

(ख) नियम 1घ के स्पष्टीकरण 2 में निर्दिष्ट रकमें आस्तियां या दायित्व नहीं मानी जाएगी।

कंपनियों के क्रोट किए गए साधारण शेयरों या अधिभोगी शेयरों का बाजार मूल्य :

1घ. किसी कंपनी के ऐसे साधारण या अधिभोगी शेयर का बाजार मूल्य जो किसी सम्पत्ति प्राप्त स्टॉक एक्सचेंज में नियमित रूप से क्रोट किया जाता है वह मूल्य माना जाएगा जो मूल्यांकन की तारीख को क्रोट किया जाता है और जहाँ मूल्यांकन की तारीख को शेयर क्रोट नहीं किया गया है वहाँ वह मूल्य माना जाएगा जो मूल्यांकन की तारीख से ठीक पूर्व क्रोट किया गया है।

आभूषणों का बाजार मूल्य.

1ड. (1) आभूषणों का बाजार मूल्य मूल्यांकन अधिकारी द्वारा धारा 16क के अधीन निर्देश किए जाने पर मूल्यांकन की तारीख को

(2) They shall come into force on the 1st day of April, 1987.

2. In the Wealth-tax Rules, 1957,—

- (a) in rule 1A, after clause (k), the following clause shall be inserted, namely :—

“(aa) “share regularly quoted on the stock exchange”, in relation to an equity share or a preference share, means—

- (i) a share quoted on any recognised stock exchange with regularity from time to time; and
- (ii) the quotations of such shares are based on current transactions made in the ordinary course of business;”

(b) in rule 1BB,—

- (i) for sub-rule (1), the following sub-rule shall be substituted, namely :

“(1) For the purposes of sub-section (1) of section 7, the value of a house shall be the amount arrived at by multiplying the net maintainable rent by the figure 12.5 :

Provided that in relation to a house which is built on leasehold land, this sub-rule shall have effect as if for the figure 12.5,—

- (a) where the house is constructed on leasehold land and the unexpired period of lease is fifty years or more, the figure 10.00 had been substituted; and
- (b) where the house is constructed on leasehold land and the unexpired period of lease is less than fifty years, the figure 8.0 had been substituted :

Provided further that in respect of a house acquired or constructed after the 31st March, 1974, if the value so arrived at is lower than the cost of acquisition or the cost of construction as increased by the cost of improvement in the house, if any, the said cost of acquisition or the said cost of construction shall be taken as the value of the house under this rule.”;

- (ii) in sub-rule (2), for clause (a), the following clause shall be substituted, namely :—

“(a) “gross maintainable rent”, in relation to a house, means—

- (i) where the house is let, the amount received or receivable by the owner as annual rent, or
- (ii) where the house is not let, the amount of annual rent assessed by any local

authority for the purposes of levy of property tax or any other tax on the basis of such assessment and in absence of such a local authority, the amount which the owner is reasonably expected to receive had such property been let.

Explanations.—“annual rent”—

- (1) for the purposes of sub-clause (i), means,—

(a) in a case where the house is let throughout the previous year, the actual rent received by the owner in respect of such year;

(b) in any other case, the amount bears the same proportion to the amount of the actual rent received by the owner for the period for which the property is let as the period of twelve months bears to such period;

(c) where the house is in the occupation of a tenant and the taxes levied by any local authority or expenditure on repairs in respect of the house is borne wholly or partly by the tenant, the annual rent as increased by the amount of the taxes or, as the case may be, the expenditure or repairs so borne by the tenant;

- (2) for the purposes of sub-clauses (i) and (ii), means,—

(a) where the owner has accepted any amount as deposit, whether by way of advance payment towards rent or otherwise, the annual rent as increased by the amount calculated at the rate of fifteen per cent of such deposit;

(b) where the owner derives any benefit or perquisite from the house by way of leasing of the house or the modifications of the terms of its lease, whether convertible into money or not, the annual rent as increased by the value of such benefit or perquisite;”

- (c) in rule 10,—

(i) for the figures and words “85 per cent”, the words “eighty per cent” shall be substituted;

(ii) the proviso shall be omitted;

(d) after rule 10, the following rules shall be inserted, namely :—

“Market value of unquoted equity shares of investment companies.

1E. (1) The market value of an unquoted equity share of an investment company shall be determined as follows :—

The value of all the liabilities as shown in the balance sheet of such company shall

be deducted from the value of all its assets shown in that balance sheet. The market value of each equity share shall be its paid up value multiplied by the factor arrived at by dividing the net amount so arrived at by the total paid up capital of the company.

- (2) For the purpose of sub-rule (1), the value of an asset disclosed in the balance sheet shall be taken to be its value determined in accordance with the rule as applicable to that particular asset and in the absence of such a rule the price which the asset will fetch if sold in the open market on the valuation date.

Explanation.—for the purposes of this rule,—

- (a) the expression “balance sheet” has the same meaning as in Explanation I to rule 10;’
(b) the amounts referred to in Explanation II to rule 1D shall not be treated as assets or liabilities.

Market value of quoted equity shares or preference shares of companies

1F. The market value of an equity or a preference share of any company which is regularly quoted at any recognised stock exchange shall be taken as the value quoted on the valuation date and where the share has not been quoted on the valuation date, the value quoted immediately preceding the valuation date.

Market value of jewellery.

1G. (1) The market value of jewellery shall be taken to be the value estimated by the Valuation Officer on reference under section 16A as on a valuation date and the value so estimated shall be taken to be the market value on the said valuation date and the next following four valuation dates, subject to the following adjustments, namely :—

- (a) where the jewellery includes gold or silver any alloy containing gold or silver, the market value of gold or silver or such alloy, as the case may be, shall be taken to be the value on the valuation date;
(b) where any jewellery or part of jewellery is sold or otherwise disposed of, or any jewellery or part of jewellery is acquired on or before the valuation date, the value of jewellery shall be reduced or increased, as the case may be, from the value estimated by the Valuation Officer.

(2) Notwithstanding anything contained in sub-rule (1), the market value of jewellery shall be taken 1793 GI/85—2

to be the value declared by the assessee where the value of jewellery so declared in the return of net wealth does not exceed rupees five lakhs and such valuation is accompanied with information specified in Form BA.

Explanation.—For the purposes of this rule, “jewellery” includes—

- (a) ornaments made of gold, silver, platinum or any other precious metal or any alloy containing one or more of such precious metals, whether or not containing any precious or semi-precious stone, and whether or not worked or sewn into any wearing apparel;
(b) precious or semi-precious stones, whether or not met in any furniture, utensil or other article of worked or sewn into any apparel;
(c) in the Appendix, after Form B, the following Form shall be inserted, namely :—

“FORM BA

(See rule 1G)

Statement of jewellery held by the assessee

Sl. No.	Description of jewellery	Number of pieces	Weight for all pieces (grammes)	Total value
1	2	3	4	5

Total : Rs. _____

Notes:

- Each item of jewellery having identical description and weight should be listed separately.
- The description of jewellery should be such as to enable the jewellery to be clearly identified.
- If any adjustment is made for the content of impurities or for any other reason, the same should be clearly explained by giving a separate note.
- The rate at which silver and gold content of jewellery is valued should be clearly indicated.”.

[No. 6637/F. No. 134/10.86-TPL]
P. K. APPACHOO, Jt. Secy. (TPL)

Note :—Principal rules were published under Notification No. S.R.O. 3384 dated 18-10-1957 and subsequently amended by S.O. No. 271 dated 27-1-1961, 798 dated 30-4-1963, 1473 dated 28-9-1964, 2064 dated 4-6-1968, 2432 dated 2-7-1968, 1026 dated 10-3-1970, 288 dated 1-9-1970, 2882 dated 1-9-70, 999 dated 26-2-1971, 165 dated 25-2-1972, 437 dated 21-6-1972, 707 dated 15-11-1972, 154 dated 17-3-1973, 187 dated 31-3-1973, 327 dated 4-6-1973, 21 dated 4-1-1974, 599 dated 8-10-1974, 726 dated 19-12-1974, 739 dated 30-12-1974, 559 dated 30-9-1975, 147 dated 1-3-1976, 267 dated 31-3-1976,

702 dated 3-11-1976, 732 dated 5-11-1976, 16, dated 12-1-1977, 166 dated 15-2-1977, 721 dated 14-10-1977, 434 dated 7-7-1978, 554 dated 11-9-1978, 169 dated 30-3-1979, 610 dated 29-10-1979, 41 dated 19-1-1980, 75 dated 28-1-1980, 119 dated 29-2-1981, 397 dated 30-5-1981, 493 dated 19-6-1981, 130(E) dated 22-2-1983 and 273(E) dated 31-3-1983, 158(E) dated 12-3-1984, 758(E) dated 1-10-1984, 951(E) dated 21-12-1984, 958(E) dated 26-12-1984, 658(E) dated 19-9-1985.